❁ 19 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] जो धर्म स्थापन करने आते हैं, वह तो पवित्र आत्मायें ही आती हैं। वह तो अपवित्र हो न सकें। पहले-पहले जब आते हैं तो पवित्र होने कारण उनकी आत्मा वा शरीर को दु:ख मिल न सके क्योंकि उन पर को ई पाप है नहीं। हम जब पवित्र हैं तो कोई पाप नहीं होता है तो दूसरों का भी नहीं होता है।

2] हमको घर जाना है। पतित आत्मा तो वापिस जा न सके। न कोई ऐसा समझाने वाला है कि किसको याद करो। बाप समझाते हैं– याद एक को ही करना है। और कोई को याद करने से क्या फायदा ! समझो, भक्ति मार्ग में शिव-शिव कहते रहते हैं, मालूम तो किसको है नहीं कि इससे क्या होगा। शिव को याद करने से पाप कटेंगे– यह किसको भी पता नहीं है। आवाज़ सुनाई देगा। सो तो जरूर आवाज़ होगा ही। इन सब बातों से कोई फायदा नहीं।

3] जब मुर्दे को उठाते हैं तो पहले पैर शमशान तरफ करते हैं। फिर जब वहाँ अन्दर घुसते हैं, पूजा आदि कर समझते हैं अभी यह स्वर्ग जा रहा है तो उसे फिराकर मुंह शमशान तरफ कर देते हैं।

4] अब बाबा ने आकर रास्ता बताया है, बाकी सब फंसे हुए है, छूटते नहीं। सजायें खाकर फिर सब छूट जायेंगे। तुम बच्चों को समझाते रहते हैं, मोचरा खाकर थोड़ेही मानी (रोटी) लेनी है। मोचरा बहुत खाते हैं तो पद भ्रष्ट हो जाता है, मानी (रोटी) कम मिलती है। थोड़ा मोचरा (सजा) तो मानी अच्छी मिलेगी। यह तो कांटों का जंगल। सब एक-दो को कांटा लगते रहते हैं। स्वर्ग को कहा जाता है– गार्डन ऑफ अल्लाह।

5] वन्डर हैं यहाँ कहते भी हैं हम पवित्र बनेंगे फिर जाकर पतित बन जाने हैं। ऐसे-ऐसे कच्चों को नहीं ले आओ। ब्राह्मणी का काम है जांच कर लाना।

✺ योग-

1] जब भी समय मिले तो शरीर से डिटैच होने की प्रैक्टिस करो। डिटैच होने से आत्मा में शक्ति वापिस आयेगी, उसमें बल भरेगा। तुम अण्डर-ग्राउण्ड मिलेट्री हो, तुम्हें डायरेक्शन मिलता है– अटेन्शन प्लीज़ अर्थात् एक बाप की याद में रहो, अशरीरी हो जाओ।

2] अटेन्शन, बाप की याद में हो? बाप का डायरेक्शन अथवा श्रीमत मिलती है, तुमने आत्मा को भी पहचाना है, बाप को भी पहचाना है तो बाप को याद करने बिगर तुम विकर्माजीत अथवा सतोप्रधान पवित्र नहीं बन सकते। मूल बात ही यह है, बाप कहते हैं मीठे-मीठे लाडले बच्चों ! अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।

3] तुम्हारी याद की या त्रा गुप्त है, सिर्फ बाप कहते हैं मुझे याद करो क्योंकि बाप जानते हैं याद से इन बिचारों का कल्याण होगा।

4] ज्ञान सहित याद में रहने से पाप कटते हैं।

5] जब तक जीना है, बाप को याद करना है। याद से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप कटते हैं। याद ही नहीं करेंगे तो पाप भी नहीं कटेंगे। बाप को याद करना है, याद में आंखें कभी बन्द नहीं करनी हैं।

...2

❁ 19 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

✹ धारणा-

1] बाप घड़ी-घड़ी समझाते हैं एक आंख में शान्तिधाम, दूसरी आंख में सुखधाम रखो।

2] यहाँ आकर जब बैठते हो तो अटेन्शन। बुद्धि बाप में लगी रहे। तुम्हारा यह अटेन्शन फार एवर (सदा के लिए) है।

3] जितना संगठन बड़ा होता है, बातें भी उतनी बड़ी होंगी। लेकिन अपनी सेफ्टी तब है जब देखते हुए न देखें, सुनते हुए न सुनें। अपने स्वचिंतन में रहें। स्वचिंतन करने वाली आत्मा परदर्शन से मुक्त हो जाती है। अगर किसी कारण से सुनना पड़ता है, अपने आपको जिम्मेवार समझते हो तो पहले अपनी ब्रेक को पावरफुल बनाओ। देखा-सुना, जहाँ तक हो सका कल्याण किया और फुल स्टॉप।

✹ सेवा-

1] बाप को याद जरूर करना है, जब कोई रास्ते में मिले तो उनको बताना है। पहचान वाले भी बहुत मिलते हैं, वह तो एक-दो को राम-राम करते हैं, उनको बोलो आपको पता है यह दु:खधाम है, वह है शान्तिधाम और सुखधाम। आपको इशारा देते हैं। लाइट-हाऊस भी इशारा देता है। यह नईया है जो रावण की जेल में लटक पड़ी है। मनुष्य, मनुष्य को सैलवेज़ कर नहीं सकते। वह तो सब हैं आर्टीफिशयल हद की बातें। यह है बेहद की बात। सोशल सोसायटी की सेवा भी वह नहीं है। वास्तव में सच्ची सेवा यह है– सभी का बेड़ा पार करना है। तुम्हारी बुद्धि में है मनुष्यों की क्या सर्विस करें।

2] पहले तो कहना है तुम गुरू करते हो- मुक्तिधाम में जाने के लिए, बाप से मिलने लिए। परन्तु कोई मिलता नहीं। मिलने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं। वह समझते हैं– यह शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिलता है, दिलासे पर रहने से फिर आखरीन कोई न कोई रूप में मिलेगा। कब मिलेगा- यह बाप ने तुमको सब कुछ समझाया है। तुमने चित्र में दिखाया है एक को याद करना है। जो भी धर्म स्थापक हैं वह भी ऐसे इशारा देते हैं क्योंकि तुमने शिक्षा दी है तो वह भी ऐसे इशारे देते हैं। साहेब को जपो, वह बाप है सतगुरू। बाकी तो अनेक प्रकार की शिक्षायें देने वाले हैं। उनको कहा जाता है गुरू। अशरीरी बनने की शिक्षा कोई जानते नहीं। तुम कहेंगे शिवबाबा को याद करो। वो लोग शिव के मन्दिर में जाते हैं तो हमेशा शिव को बाबा कहने की आदत पड़ी हुई है और किसको बाबा नहीं कहते हैं, परन्तु वह निराकार तो नहीं है। शरीरधारी है। शिव तो निराकार, सच्चा बाबा, वह तो सबका बाबा हुआ। सब आत्मायें अशरीरी हैं।

3] तुम समझा सकते हो कि बाप कैसे आते हैं, जबकि देवताओं के पैर भी पुरानी तमोप्रधान सृष्टि पर नहीं आते तो फिर बाप कैसे आयेंगे? बाप तो है निराकार, उनको तो अपना पांव है नहीं इसलिए इनमें प्रवेश करते हैं।